बजरंग बाण

इन पाठों के बारे में

स्रोत — हर पाठ अपने स्रोत, परम्परा और संस्करण के साथ छपा है। अन्य परम्पराओं और संस्करणों में शब्दों में थोड़ा अन्तर हो सकता है।

लिप्यन्तरण — रोमन पंक्ति देवनागरी से बना IAST लिप्यन्तरण है (ā = दीर्घ आ, ṃ = अनुस्वार, ḥ = विसर्ग, ś/ṣ = श/ष, c = च)। हिन्दी, अवधी और ब्रज पाठों में शब्द के अन्त का मौन 'अ' नहीं लिखा जाता। लिप्यन्तरण में वैदिक स्वर नहीं दिखते।

बजरंग बाण

प्रकार	स्तोत्र
देवता	श्री हनुमान
संस्करण	मिलान किया गया पाठ
परम्परा	वैष्णव
स्रोत	पारम्परिक भक्ति पाठ (प्रचलित मुद्रित एवं मौखिक रूप) — Ram Nam Sankirtan Mandal, Bareilly (1993) Hanuman Chalisa booklet; archive.org Hanuma-chalisa-bareilly leaves 10–15
आभार	पाठ राम नाम संकीर्तन मण्डल, बरेली (1993) की हनुमान चालीसा पुस्तिका के स्कैन (archive.org) से लिया और दो अन्य प्रतियों से मिलाया गया। सार और अर्थ: उद्योग ज्योतिष सम्पादकीय टीम।
कॉपीराइट	Traditional devotional text in wide circulation, popularly attributed to Goswami Tulsidas; public domain. Transcribed in

निश्चय प्रेम प्रतीति ते, बिनय करै सनमान ।

niścay prem pratīti te, binay karai sanamān |

तेहि के कारज सकल सुभ, सिद्ध करैं हनुमान ॥

tehi ke kāraj sakal subh, siddha karaiṃ hanumān ||

जय हनुमंत संत-हितकारी ।

jay hanumaṃt saṃt-hitakārī |

सुनि लीजै प्रभु बिनय हमारी ॥

suni līje prabhu binay hamārī ||

जन के काज बिलंब न कीजै ।

jan ke kāj bilaṃb na kījai |

आतुर दौरि महासुख दीजै ॥

ātur dauri mahāsukh dījai ||

जैसे कूदि सिंधु के पारा ।

jaise kūdi siṃdhu ke pārā |

सुरसा बदन पैठि बिस्तारा ॥

surasā badan paiṭhi bistārā ||

आगे जाय लंकिनी रोका ।

āge jāy laṃkinī rokā |

मारेहु लात गई सुरलोका ॥

mārehu lāt gaī suralokā ||

जय बिभीषन को सुख दीन्हा ।

स्रोत-सहित पारम्परिक पाठ। किसी निश्चित परिणाम का दावा नहीं।

jay bibhīṣan ko sukh dīnhā |

सीता निरखि परम-पद लीन्हा ॥

sītā nirakhi param-pad līnhā ||

बाग उजारि सिंधु महँ बोरा ।

bāg ujāri siṃdhu maham borā |

अति आतुर जमकातर तोरा ॥

ati ātur jamakātar torā ||

अछय कुमार मारि संहारा ।

achay kumār māri saṃhārā |

लूम लपेटि लंक को जारा ॥

lūm lapeṭi laṃk ko jārā ||

लाह समान लंक जरि गई ।

lāh samān laṃk jari gaī |

जय जय धुनि सुरपुर नभ भई ॥

jay jay dhuni surapur nabh bhaī ||

अब बिलम्ब केहि कारन स्वामी ।

ab bilamba kehi kāran svāmī |

कृपा करहु उर अंतरजामी ॥

kṛpā karahu ur aṃtarajāmī ||

जय जय लखन प्रान के दाता ।

jay jay lakhan prān ke dātā |

आतुर ह्वैदुख करहु निपाता ॥

ātur hvaidukh karahu nipātā ||

जय हनुमान जयति बल-सागर ।

jay hanumān jayati bal-sāgar |

सुर-समूह-समरथ भट-नागर ॥

sur-samūh-samarath bhaṭ-nāgar ||

ॐ हनुहनु हनु हनुमंत हठीलै ।

oṃ hanuhanu hanu hanumaṃt haṭhīlai |

बैरिहि मारु बज्र की कीलै ॥

bairihi māru bajra kī kīlai ||

ॐ हीं हीं हीं हनुमंत कपीसा ।

oṃ hīṃ hīṃ hīṃ hanumaṃt kapīsā |

ॐ हुं हुं हुं हनु अरि उर-सीसा ॥

oṃ huṃ huṃ huṃ hanu ari ur-sīsā ||

जय अंजनिकुमार बलवंता ।

jay aṃjanikumār balavaṃtā |

संकरसुवन बीर हनुमंता ॥

saṃkarasuvan bīr hanumaṃtā ||

बदन कराल काल-कुल-घालक ।

स्रोत-सहित पारम्परिक पाठ। किसी निश्चित परिणाम का दावा नहीं।

badan karāl kāl-kul-ghālak |

राम-सहाय सदा प्रतिपालक ॥

rām-sahāy sadā pratipālak ||

भूत, प्रेत, पिसाच, निसाचर ।

bhūt, pret, pisāc, nisācar |

अगनि बेताल काल मारी मर ॥

agani betāl kāl mārī mar ||

इन्हें मारु, तोहि सपथ राम की ।

inheṃ māru, tohi sapath rām kī |

राखु नाथ मरजाद नाम की ॥

rākhu nāth marajād nām kī ||

सत्य होहु हरि सपथ पाइ कै ।

satya hohu hari sapath pāi kai |

रामदूत धरु मारु धाइ कै ॥

rāmadūt dharu māru dhāi kai ||

जय जय जय हनुमंत अगाधा ।

jay jay jay hanumaṃt agādhā |

दुख पावत जन केहि अपराधा ॥

dukh pāvat jan kehi aparādhā ||

पूजा जप तप नेम अचारा ।

pūjā jap tap nem acārā |

नहि जानत कछु दास तुम्हारा ॥

nahi jānat kachu dās tumhārā ||

बन उपबन मग गिरि गृह माहीं ।

ban upaban mag giri gṛh māhīṃ |

तुम्हरे बल हौं डरपत नाहीं ॥

tumhare bal hauṃ ḍarapat nāhīṃ ||

जनकसुता-हरि-दास कहावौ ।

janakasutā-hari-dās kahāvau |

ता की सपथ, बिलंब न लावौ ॥

tā kī sapath, bilaṃb na lāvau ||

जय-जय-जय-धुनि होत अकासा ।

jay-jay-jay-dhuni hot akāsā |

सुमिरत होय दुसह दुख नासा ॥

sumirat hoy dusah dukh nāsā ||

चरन पकरि, कर जोरि मनावौं ।

caran pakari, kar jori manāvauṃ |

यहि औसर अब केहि गोहरावौं ॥

yahi ausar ab kehi goharāvauṃ ||

उठ, उठ, चलु, तोहि राम दोहाई ।

स्रोत-सहित पारम्परिक पाठ। किसी निश्चित परिणाम का दावा नहीं।

uṭh, uṭh, calu, tohi rām dohāī |

पायँ परौं, कर जोरि मनाई ॥

pāyam parauṃ, kar jori manāī ||

ॐ चम चम चम चपल चलंता ।

oṃ cam cam cam cam capal calaṃtā |

ॐ हनु हनु हनु हनु हनु-हनुमंता ॥

oṃ hanu hanu hanu hanu hanu-hanumaṃtā ||

ॐ हं हं हाँक देत कपि चंचल ।

oṃ haṃ haṃ hāmk det kapi caṃcal |

ॐ सं सं सहमि पराने खल-दल ॥

oṃ saṃ saṃ sahami parāne khal-dal ||

अपने जन को तुरत उबारौ ।

apane jan ko turat ubārau |

सुमिरत होय अनंद हमारौ ॥

sumirat hoy anaṃd hamārau ||

यह बजरंग-बाण जेहि मारै ।

yah bajaraṃg-bāṇ jehi mārai |

ताहि कहौ फिरि कवन उबारै ॥

tāhi kahau phiri kavan ubārai ||

पाठ करै बजरंग-बाण की ।

pāṭh karai bajaraṃg-bāṇ kī |

हनुमत रच्छा करें प्रान की ॥

hanumat racchā kareṃ prān kī ||

यह बजरंग-बाण जो जापैं ।

yah bajaraṃg-bāṇ jo jāpaiṃ |

तासों भूत-प्रेत सब काँपै ॥

tāsoṃ bhūt-pret sab kāmpai ||

धूप देय जो जपै हमेसा ।

dhūp dey jo japai hamesā |

ता के तन नहिं रहै कलेसा ॥

tā ke tan nahiṃ rahai kalesā ||

उर प्रतीति दृढ़, सरन् है, पाठ करै धरि ध्यान ।

ur pratīti dṛṛh, saran hai, pāṭh karai dhari dhyān |

बाधा सब हर, करै सब काम सफल हनुमान ॥

bādhā sab har, karai sab kām saphal hanumān ||

अर्थ

आरम्भिक दोहा कहता है कि जो दृढ़ प्रेम और विश्वास से विनय करे उसके सब कार्य हनुमान सिद्ध करते हैं। चौपाइयों में समुद्र लाँघने, लंका जलाने, लक्ष्मण को बचाने और बन्दियों को छुड़ाने का स्मरण है; फिर भक्त अपनी विपत्ति कहकर बीजाक्षरों और बार-बार की पुकार के साथ राम की शपथ देकर उन्हें उठने, भूत-प्रेत, ज्वर और शत्रुओं को नष्ट करने और देर न करने को कहता है। अन्त में कहा गया है कि यह "बजरंग बाण" जिस पर चले वह बच नहीं सकता, जो धूप देकर इसका जप करे उसके तन में क्लेश नहीं रहता, और अन्तिम दोहा दृढ़ विश्वास से पाठ करने पर सब बाधाएँ दूर होने की बात कहता है। यह संक्षिप्त भावार्थ है, अनुवाद नहीं।

स्रोत-सहित पारम्परिक पाठ। किसी निश्चित परिणाम का दावा नहीं।

इस दस्तावेज़ के बारे में

इस दस्तावेज़ के पाठ सार्वजनिक (पब्लिक डोमेन) पारम्परिक भक्ति पाठ हैं या हमारी टीम द्वारा लिखे गए हैं, और अपने दर्ज स्रोत व संस्करण के साथ छपे हैं।

अर्थ हमारे शब्दों में संक्षिप्त व्याख्याएँ हैं, विद्वत्तापूर्ण अनुवाद नहीं। किसी पाठ के अपने श्लोकों में बताए लाभ पाठ का अंश हैं, गारण्टी नहीं।

कुछ साधनाएँ परम्परा से गुरु-मार्गदर्शन में की जाती हैं। अपनी परम्परा के मार्गदर्शन का पालन करें।